thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

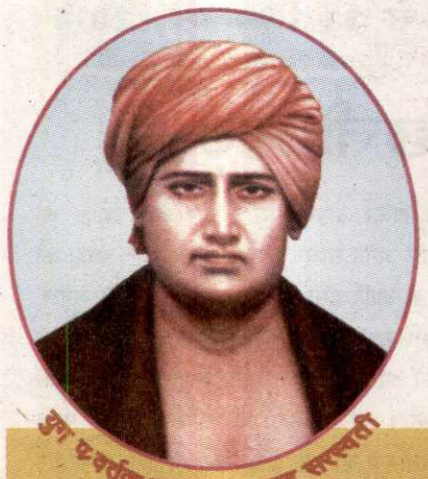

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 45 25 से 31 दिसम्बर, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 पौ. शु-04

आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम कौसरंगी जिला-महासमन्द छत्तीसगढ़ में वेद पर्व एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन भव्यता एवं धूमधाम से सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा ध्वजारोहण से हुआ कार्यक्रम का उद्घाटन

आर्ष ज्योति आश्रम कौसरंगी जिला-महासमन्द छत्तीसगढ़ में आयोजित राष्ट्रीय वेद पर्व एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन का शुभारम्भ 5 दिसम्बर, 2014 को प्रात: 10 बजे सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण के साथ किया। इस अवसर पर आर्य जगत के तपोनिष्ठ, त्यागमूर्ति, कर्मयोगी वीतराग संन्यासी स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के अतिरिक्त संस्था के प्रधान कै. रुद्रसेन जी प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य महावीर मीमांसक, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, महर्षि सांदीपनी वेद शिक्षा प्रतिष्ठान के सचिव प्रो. रूप किशोर शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ के कोषाध्यक्ष श्री अवनी भूषण पुरन्ध, आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ के पूर्व प्रधान आचार्य दयासागर, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. कमल नारायण आर्य, स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती आर्य भजनोपदेशक श्री सत्यपाल 'सरल' एवं अन्य अनेक आर्य विद्वान नेता, संन्यासी उपस्थित थे। सैकड़ों विद्यार्थियों एवं आगन्तुक महानुभावों की उपस्थिति में स्वामी आर्यवेश जी ने ओ३म् ध्वज की व्याख्या करते हुए क्षात्र शक्ति एवं ब्रह्म शक्ति के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

ध्वजारोहण के उपरान्त उद्घाटन सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसमें छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। उनके साथ क्षेत्रीय विधायक, पूर्व विधायक कौसरंगी, ग्राम के सरपंच, हरिभूमि अखबार के सम्पादक श्री हिमांशु आदि भी साथ थे। मुख्य मंच से कार्यक्रम का संयोजन गुरुकुल आमसेना के आचार्य डॉ. कुञ्जदेव मनीषी ने किया। उन्होंने मुख्यमंत्री सहित समस्त गणमान्य महानुभावों का माल्यार्पण तथा स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मान किया। गुरुकुल के आचार्य श्री कोमल कुमार आर्य ने मुख्यमंत्री के सम्मान में ज्ञापन पत्र पढ़ते हुए गुरुकुल की मुख्य मांग उनके समक्ष प्रस्तुत की। गुरुकुल के प्रधान कै. रुद्रसेन ने गुरुकुल का पूरा परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि इस गुरुकुल की स्थापना 2004 में स्वामी रामदेव जी द्वारा की गई तथा भवनों का लोकार्पण मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। कै. रुद्रसेन जी ने मुख्यमंत्री महोदय से कक्षा पांच तक का एक संस्कृत विद्यालय गुरुकुल के समीप सरकार द्वारा प्रारम्भ करने का अनुरोध किया तथा साथ ही संस्कृत महाविद्यालय की स्वीकृति तथा आर्ष पाठ्यविधि को मान्यता देने की भी मांग की। क्षेत्र के विधायक श्री चोपड़ा जी व श्री हिमांशु ने मुख्यमंत्री जी के सम्मान में स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए गुरुकुल को सरकार की ओर से अनुदान देने तथा प्रस्तुत सभी मांगों को पूर्ण करने की प्रार्थना की। गुरुकुल के संचालक स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने मुख्यमंत्री जी के पधारने का जहां धन्यवाद ज्ञापित किया वहीं आर्ष पाठ्य विधि को मान्यता देने की भी प्रार्थना की। स्वामी जी ने मुख्यमंत्री जी की प्रशस्ति करते हुए कहा कि आप भारतीय संस्कृति के प्रबल पक्षधर हैं हमें पूर्ण विश्वास है कि आप भारतीय संस्कृति एवं वेद के प्रचार-प्रसार के लिए पूरा सहयोग करेंगे। मुख्यमंत्री श्री रमन सिंह जी ने अपने भाषण में महर्षि दयानन्द सरस्वती के भारत पुनर्निमाण में योगदान का गुणगान किया वहीं उन्होंने गुरुकुलों की भूमिका पर भी विशेष प्रकाश डाला। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि संस्कृत के बिना संस्कृति जीवित नहीं रह सकती अत: गुरुकुलों में अनिवार्य रूप से संस्कृत का अध्यापन होता है यह बड़े संतोष की बात है। उन्होंने गुरुकुल प्रबन्ध समिति एवं स्वामी धर्मानन्द जी को आश्वस्त किया कि वे अपना कार्य जारी रखें उन्हें सरकार की ओर से आर्थिक एवं अन्य आवश्यक सहायता पूरी तरह से प्रदान की जायेगी। उन्होंने संस्कृत महाविद्यालय तथा पांचवी तक संस्कृत विद्यालय खोलने की भी स्वीकृति प्रदान की।

त्रिदिवसीय इस कार्यक्रम में प्रात: 8 से 10 बजे तक यज्ञ तथा दोपहर 3 बजे से सायं तक दो सत्रों में वैदिक संस्कृति सम्मेलन निरन्तर चलते रहे। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में महर्षि सांदीपनी राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान (मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार) के सहयोग से देशभरके वैदिक विद्वानों तथा वेदपाठी पंडितों को आमंत्रित किया गया था। प्राचीन वैदिक पद्धति से किये जाने वाले वेदपाठ से उपस्थित जनता मन्त्रमुग्ध रही। कार्यक्रम में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी के ओजस्वी सिद्धान्त से परिपूर्ण एवं प्रभावशाली व्याख्यानों की धूम मची रही। लोगों की विशेष मांग रहती थी कि वे आचार्य श्रोत्रिय जी को पुन:-पुन: सुनना चाहते हैं। उनकी ओजस्वी वाणी एवं तार्किक शैली के व्याख्यानों से लोग मन्त्र मुग्ध थे। डॉ. महावीर

शेष पृष्ठ 2 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

पृष्ठ–1 का शेष

आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम कौसरंगी जिला–महासमन्द छत्तीसगढ़ में

मीमांसक के वेदों में विज्ञान विषय पर विशेष व्याख्यान हुए तथा उन्होंने अनेक उदाहरण देकर वेदों में विज्ञान को जनता के सामने प्रस्तुत किया। श्री सत्यपाल सरल के भजनों ने भी कार्यक्रम में समां बांध दिया और उनका साथ दे रहे ढोलक वादक श्री मोहन लाल की कला देखते ही बनती थी।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में आर्य समाज के भावी कार्यक्रम एवं सप्तक्रांति के बिन्दुओं पर विशेष प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आर्य समाज पूरे देश में नशाबन्दी आन्दोलन चलायेगा तथा केन्द्र सरकार से आग्रह करेगा कि शराब के सम्बन्ध में राष्ट्रीय नीति घोषित की जाये तथा पूरे देश में पूर्ण शराबबन्दी लागू की जाये। स्वामी जी ने कहा कि आज भारत में नशाबन्दी की बढ़ती हुई प्रवृत्ति से देश की बहुत बड़ी हानि हो रही है। जितनी दुर्घटनायें होती हैं तथा अन्य अनैतिक कार्यों में भी शराब ही मुख्य रूप से जिम्मेदार मानी जाती हैं उन्होंने कहा कि शराब पीने से व्यक्ति की बुद्धि कार्य करना छोड़ देती है और वह सही निर्णय नहीं ले पाता। शराब के नशे में धुत होकर व्यक्ति अपनी बेटी तक पर हाथ उठा देता है ऐसी अनेकों घटनायें हम समाचार पत्रों में पढ़ते रहते हैं। आज बलात्कार की जितनी घटनायें होती हैं उनमें मुख्य कारण शराब ही होती है। अत: पूरे देश में शराबबन्दी लागू करना समय की मांग है। आर्य समाज पूरे देश में जन-जागरण आन्दोलन चलायेगा तथा इस कार्य में अन्य संगठनों का भी सहयोग लिया जायेगा। कन्या भ्रूण हत्या को जघन्य पाप बताते हुए स्वामी जी ने जनता का आह्वान किया कि वे माँ के पेट में पलने वाली कन्या भ्रूण की हत्या ना करें। कन्या भ्रूण की हत्या ईश्वरीय नियम का उल्लंघन है, जघन्य पाप कर्म है। तथा सामयिक कानून के भी विरुद्ध है। बेटियों को मारकर लोग मात्र शक्ति का अपमान तो करते ही हैं परोक्ष रूप से किसी विशेष आत्मा अथवा महान नारी की हत्या करते हैं। क्योंकि यह कोई नहीं जानता कि कन्या भ्रूण हत्या से मारी जाने वाली कन्यायें यदि पैदा हो जाती तो कौन जानता है कि कौशल्या बनती और राम को जन्म देती, देवकी बनती तो योगेश्वर श्रीकृष्ण को जन्म देती और विद्यावती बनती तो भगत सिंह को जन्म देती किन्तु निर्दयी माता-पिता तथा कातिल डॉक्टर आज करोड़ों कन्याओं को जन्म लेने से पहले ही मांओं के पेट में ही मार देते हैं।

स्वामी आर्यवेश जी ने धर्म के नाम पर पूरे देश में चल रहे पाखण्ड एवं अन्धविश्वास को समय की सबसे बड़ी चुनौती बताया। उन्होंने कहा कि आज बड़े-बड़े कथित धर्मगुरु लोगों की धार्मिक भावनाओं का दोहन करके उन्हें अज्ञान एवं अंधेरे में धकेल रहे हैं। कोई गुप्त नाम तो कोई गुप्त मंत्र और गण्डे ताबीज देकर लोगों को बहकाते हैं। ठगते हैं। धर्म भीरू जनता ऐसे प्रपंचियों के जाल में फंस कर विभिन्न अनाचार, अत्याचार, पापाचार की शिकार हो रही है। हरियाणा का एक कथित संत, संत के नाम पर कलंक रामपाल दास की समस्त कार्य गुजारियाँ आज पूरे समाज के सामने आ गई है लोगों ने स्वयं देखा कि उसके सतलोक (झूठ लोक) आश्रम में महिलाओं के साथ किस प्रकार दुराचार किया जाता था, अवैध हथियारों का जखीरा, शराब एवं अन्य अवैध चीजों का भण्डार तथा नक्सलवादियों से सम्बन्ध रखने वाले असामाजिक लोगों का जमावड़ा हजारों रुपये जमा करवाकर श्रद्धालुओं को स्वर्ग भेजने की घोषणायें और स्नान किये हुए दूध से खीर बनाकर खिलाना और बड़े-बड़े लालच और आश्वासन देकर बहकाना, यह सब कुछ सतलोक आश्रम के रूप में झूठलोक में होता था तथा आज वह सीखचों के पीछे बन्द हैं। कुछ समय पहले एक कथित संत आशाराम की लीलायें जनता देख चुकी है। स्वामी जी ने कहा कि जब तक लोग बुद्धि विवेक और सृष्टि नियम के पैमाने पर धर्म और धर्म के नाम पर चल रहे सारे धन्धे को नहीं परखेंगे तब तक इनके जाल से मुक्त नहीं हो सकते। स्वामी जी ने समस्त आर्य महानुभावों का आह्वान किया वे महर्षि दयानन्द के वेदसम्मत विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करें। स्वामी जी ने युवाओं को नैतिकता, ईमानदारी, समाज सेवा, देश भक्ति, ईश्वर भक्ति के संस्कार देने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक सभा पूरे देश में तेजस्वी युवा भारत अभियान चलायेगी और देश के युवाओं को वैदिक संस्कृति से ओत-प्रोत करेगी। स्वामी जी ने केन्द्र सरकार से आग्रह किया कि शिक्षा के पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों, चरित्र निर्माण तथा धर्म शिक्षा को शामिल किया जाये। सभा प्रधान ने स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के त्याग एवं सेवा की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए उन्हें वर्तमान समय में श्रद्धानन्द की उपाधि से विभूषित किया। जिस व्यक्ति ने भरी जवानी में नैष्ठिक ब्रह्मचर्य एवं संन्यास की दीक्षा लेकर अपना पूरा जीवन आर्ष शिक्षा को समर्पित कर दिया हो और अपने साधन सम्पन्न परिवार एवं प्रदेश को छोड़कर सुदूर उड़ीसा के आदिवासी अंचलों में जहाँ बीहड़ जंगल, खतरनाक जंगली जानवरों का प्रभुत्व हो और साधनों के नाम पर कुछ भी न हो उस जगह को आरम्भिक कार्य क्षेत्र बनाकर गुरुकुल की स्थापना की है। एसे महान व्यक्तित्व को पूरे आर्य जगत को नमन करना चाहिए। स्वामी धर्मानन्द जी एक इतिहास पुरुष के रूप में जाने जायेंगे। उनके संरक्षण में लगभग एक दर्जन गुरुकुल और आधा दर्जन आश्रम तथा संस्थाएं संचालित हो रही हैं। उन्होंने हजारों आदिवासी युवाओं (लड़के व लड़कियों) को नव-जीवन प्रदान किया है उन्हें पढ़ा लिखाकर प्रोफेसर, आचार्य बनाया है।

धर्मानन्द जी धर्म रक्षा अभियान के भी पुरोधा हैं। वे न केवल उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखण्ड प्रान्तों के ईसाई मिशनरियों के मुकाबले वैदिक संस्कृति के संवाहक बनकर कार्य कर रहे हैं अपितु आसाम, नागालैण्ड में भी उन्होंने अपने गुरुकुल खोलकर वैदिक संस्कृति का परचम लहराया है। देश एवं विदेश के आर्यजनों को स्वामी धर्मानन्द जी के इन समस्त प्रकल्पों के लिए दिल खोलकर दान राशि भेजनी चाहिए। उनका मुख्यालय गुरुकुल आमसेना, खरियार रोड नुआपाड़ा, उड़ीसा है।

कार्यक्रम के अन्तिम दिन गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भव्य व्यायाम प्रदर्शन हुआ जिसकी अध्यक्षता छत्तीसगढ़ के शिक्षामंत्री श्री केदार कश्यप ने की। ब्रह्मचारियों ने अद्‌भुत व्यायाम क्रियाएं दिखाकर उपस्थित जनता को तथा स्वयं शिक्षामंत्री एवं अन्य प्रशासनिक अधिकारियों को चकित कर दिया।

जो क्रियाएं कमाण्डों प्रशिक्षण में की जाती है ब्रह्मचारियों ने वे सभी आकर्षक क्रियायें करके दिखाई। ब्रह्मचारियों के प्रदर्शन से प्रसन्न होकर शिक्षामंत्री ने उनके दुग्धपान के लिए एक लाख पच्चीस हजार रुपये व्यक्तिगत रूप से प्रदान किये।

इससे पूर्व महा समन्द के सांसद ने पांच लाख रुपये की राशि गुरुकुल के भवन निर्माण के लिए प्रदान की। स्वामी आर्यवेश जी की अपील पर अन्य दानियों ने भी सहयोग किया। यह तीन दिवसीय कार्यक्रम पूर्ण उत्साह तथा उल्लास के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

88 वें बलिदान दिवस पर कृतज्ञ राष्ट्र की स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धांजलि

शुद्धि आन्दोलन का शुभारम्भ सबसे पहले स्वामी श्रद्धानन्द ने किया

–सतीश उपाध्याय ने दी श्रद्धाजंलि

नई दिल्ली । मंगलवार, 23 दिसम्बर 2014, आर्य समाज की युवा संस्था केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में कान्सटीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग में सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, गुरूकुल कांगड़ी, हरिद्वार के संस्थापक, मूर्धन्य आर्य संन्यासी "स्वामी श्रद्धानन्द जी का 88 वां बलिदान दिवस" समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह में दिल्ली के कोने–कोने से सैंकड़ो आर्य प्रतिनिधियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री सतीश उपाध्याय (प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा) ने कहा कि सबसे पहले घर वापसी अभियान का शुभारम्भ आज से 100 वर्ष पहले शुद्धि आन्दोलन के माध्यम से स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ही किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरूकुल शिक्षा प्रणाली को पुनः जीवित किया व समान शिक्षा पद्धति को बढ़ावा दिया यही उनकी कथनी और करनी की समानता का प्रेरक उदाहरण है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेकर देश की एकता और अखण्डता के लिए सब आर्य जन एक जुट हों। स्वामी श्रद्धानन्द ने विश्व बन्धुत्व का सन्देश हम सबको दिया तथा नैतिकता का पाठ पढ़ाया जो केवल भारत के पास है वह पूरे विश्व में और कहीं नहीं मिलेगा।

डा. विजय कुमार मल्होत्रा (पूर्व सांसद) ने कहा कि हमें जो विचार महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दिये उसे आज जीवन में लागू करने की आवश्यकता है, उनके बलिदान दिवस पर उन्हें याद करने का अर्थ है कि सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना। आपसी भाई चारे से समाज व देश को मजबूत बनायें यही महापुरुषों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है। हमें समाज से ऊँच–नीच व भेदभाव को समाप्त करने का संकल्प लेना है। डा. मल्होत्रा ने कहा कि हिन्दुओं की जनसख्या कम हो रही है यह चिन्ताजनक है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द पूरे देश के लिए श्रद्धा के केन्द्र बिन्दु हैं, उन्होंने गुरूकुल कांगड़ी जैसी महान शिक्षा संस्था की स्थापना की तथा 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद भयभीत अमृतसर में स्वागताध्यक्ष बन कर कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन को सफल बनाया तथा रौलेट एक्ट के विरूद्ध निकाले जुलूस का नेतृत्व कर दिल्ली के चांदनी चौक टाउन हाल घन्टाघर पर अग्रेंजी संगीनों के सामने सीना तान दिया, यह उनकी निर्भीकता का ज्वलन्त उदाहरण है ।

वैदिक विद्वान डा. जयेन्द्र आचार्य, श्री अशोक आर्य (कमिश्नर,एक्साईज –कस्टम), आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, महेन्द्र भाई, विमलेश बंसल, सूरज गुलाटी ने अपने विचार रखे।

चौपाल के संयोजक श्री भोलानाथ विज ने कहा कि युवा शक्ति को मार्ग दर्शन देकर उन्हें सही चिंतन देने की आवश्यकता है, भारत वासियों का चिंतन ही विश्व में शान्ति स्थापित कर पायेगा। समारोह का संचालन परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने किया। पूर्व सांसद डा. विजय कुमार मल्होत्रा का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। स्वागताध्यक्ष भोलानाथ विज ने सभी का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर आर्य नेता मायाप्रकाश त्यागी, देवेन्द्र भगत, सुरेश आर्य, आचार्य सुधांशु, गायत्री मीना, ओमप्रकाश जैन, डा. रिखब चन्द जैन, डा. डी. के. गर्ग, रामकुमार सिंह, सोहन लाल मुखी, धर्मपाल आर्य, प्रवीन आर्य, ओम सपरा, रणसिह राणा, अरूण आर्य, चतरसिंह नागर, सी. ए. राजेश वैष्णव, राकेश भटनागर आदि उपस्थित थे।

–डा. अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष, के.आ.यु.परिषद्

thearyasamaj.org

सामाजिक क्रांति के शाश्वत सूत्र

- डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

...गतांक से आगे

किसी भी व्यवस्था की स्थापना सत्यं, शिवं, सुन्दरम के त्रिसूत्र पर आधारित होती हैं, उज्ज्वल सम्भावनाओं और उच्च आकांक्षाओं पर आधारित होती हैं, वर्तमान और भविष्य को उन्नतशील बनाने की सोच पर आधारित होती हैं और प्रारम्भ में अनुकूल फलितार्थ मिलने से उस व्यवस्था के प्रति विश्वास, उत्साह, प्रगाढ़ता निरन्तर बढ़ने भी लगती है। लेकिन बाद में, जब व्यवस्था की जड़ें समाज में गहराई तक चली जाती हैं, परिपक्व हो जाती हैं, हिलाये से हिलती नहीं तब उसमें आन्तरिक व बाह्य कारणों से शनैः-शनैः दोष उत्पन्न होने लगते हैं जो दीमक बनकर उस व्यवस्था को भीतर ही भीतर खोखला, जर्जरित, कमजोर लचर करने लगते हैं। इन दोषों पर काबू पाना व दूर करना कठिन होता जाता है। जातिवाद आज इसी स्थिति का शिकार है जिसमें गुण व दोष साथ-साथ दिखाई देते हैं, उसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्ष हैं। सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण की स्थिति में यह व्यवस्था कैद होकर पड़ी है अतः इसके भविष्य का निर्धारण क्षण-प्रतिक्षण बदल रही सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, राजनैतिक परिस्थितियाँ ही करेंगी कि उसे किस रूप में बने रहना है व किस रूप में नष्ट होना है। किसी चमत्कार से अथवा वज्रपात से जाति-व्यवस्था खत्म होने वाली नहीं है क्योंकि इसे संजीवनीपान कराने वाले अनेक कारक आरक्षण नीति, हरिजन एक्ट, सैन्य भर्ती के नियम, जातिगत संगठन व सर्वखाप पंचायतें, जाति आधारित राजनीति, चुनावी पंचायत पद्धति, वैवाहिक व्यवस्था, पुश्तैनी व्यवसाय, जातिगत धर्मशालाएँ, विद्यापीठ, अस्पताल, अलग-अलग जातिगत बसावटें आदि मजबूत शिलाखण्डों के रूप में मौजूद हैं। इतना निश्चित है कि सुधारवादी आन्दोलनों से, व्यवसायगत आजादी से, शहरों की ओर पलायन से, अन्तर्जातीय विवाहों से कतिपय संवैधानिक व प्रशासनिक नीतियों से जातिवाद की उग्रता, दंशता, विषमता कुछ कम हुई है व कम होती जा रही है। यह उपलब्धि भी अपने आपमें कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। शताब्दियों के संस्कार दशाब्दियों में मिटाये नहीं जा सकते अतः अपेक्षित परिवर्तन के लिए सब्र का घूंट तो पीना ही पड़ेगा। गुलाम भारत के मुकाबले आजाद भारत में जातिवाद के बन्धन जिस तेजी से ढीले पड़े हैं, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जिस तेजी से जातिवादी सोच बदल रही है वह वास्तव में किसी करिश्मे से कम नहीं है। किसी भी पुरानी परम्परा को बदलने के लिए यही कारगर उपाय हो सकता है। किसी भी व्यवस्था को बदलने के लिए समय ही नहीं, वैकल्पिक व्यवस्था भी चाहिए, इच्छा शक्ति व प्रशासनिक सुविधाएँ भी चाहिएँ - यह प्रवाह देश में तेजी से बनता जा रहा है जिसमें हमें भी अपना योगदान देकर इस सामाजिक क्रांति को अपने अंजाम तक पहुँचाना चाहिए।

साम्प्रदायिकता/जातिवाद /पाखण्ड/शोषण/नारी विष-वृक्ष पल्लवित, उसे उखाड़ फेंकना ही अपने इस राष्ट्रधर्म का /भ्रष्टाचार/नशाखोरी उत्पीड़न से जो पुष्पित फलित हो रहा है राष्ट्रधर्म है। क्या आप पालन कर रहे हैं?

भ्रष्टाचार

आजाद भारत में वायु और प्रकाश की गति से हर दिशा में भ्रष्टाचार फैला है अतः यह एक सर्वव्यापी रोग है जो हमारे चरित्र का अभिन्न अंग बनकर समूची व्यवस्था को निस्तेज एवं निष्प्रभावी बना रहा है। कैंसर और एड्स की तरह भ्रष्टाचार भी एक लाईलाज महारोग का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। हमारे देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक, धार्मिक और व्यवसायिक क्षेत्रों में यह रोग तेजी से फैला है। इस समस्या का सर्वाधिक दुखद पहलू यही है कि इस देश में लोकतांत्रिक प्रणाली है, लचर प्रशासनिक व्यवस्था और निष्प्रभावी न्यायिक ढाँचा है जो भ्रष्टाचार को मिटाने के बजाय बढ़ाने में सहायक बन रहा है। विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका लोकतन्त्र के स्थायी स्तम्भ हैं। प्रिण्ट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को इसका चौथा स्तम्भ मान लिया गया है। विहंगम दृष्टिपात करें तो ये चारों ही स्तम्भ भ्रष्टाचार के कारण खोखले होते जा रहे हैं।

विधायिका

विधायिका जो देश के लिए कानून बनाती है, संविधान में संशोधन करती है, राष्ट्रीय समस्याओं पर चिन्तन करती है, देश में कानून व्यवस्था सुनिश्चित करती है, राष्ट्र की रक्षा संरक्षा का दायित्व लेती है, विदेशी मसलों में दखल रखती है उसका गठन चुने हुए विधायक या सांसद लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा या विधान परिषद् के रूप में करते हैं। यह देश की सर्वोच्च और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण इकाई है जिसके निर्णयों पर देश का वर्तमान और भविष्य निर्भर करता है। संविधान यदि देश की आत्मा है तो ये इकाइयाँ देश के शरीर हैं। ये शरीर जितने पुष्ट, दृढ़, पवित्र, अनुशासित, संयत, मेधावी, सक्रिय और सदाचारी होंगे संविधान की गरिमा, विश्वसनीयता, परिपक्वता, गतिशीलता और प्रभविष्णुता उतनी ही बढ़ेगी। आजादी मिलते ही जो संविधान हमें मिला और उसका परिपालन करने को जो सदन केन्द्र व प्रान्तों में गठित हुए वे निश्चय ही आदर्श थे क्योंकि उनमें अधिकांश सदस्य ऐसे थे जो स्वाधीनता आन्दोलन की भट्टी से कुन्दन बनकर निकले थे। उनमें तेजस्वी, मनस्वी, ओजस्वी, वर्चस्वी और यशस्वी नेताओं की कमी नहीं थी अतः देश की जनता आश्वस्त थी कि देश का भविष्य और वर्तमान उनके हाथों में सुरक्षित है। लेकिन शनैः-शनैः जैसे-जैसे इस पीढ़ी के लोग विविध कारणों से नेपथ्य में जाते रहे त्यों-त्यों ऐसे-ऐसे सदस्य जाति-बल, सम्प्रदाय बल, स्थान बल, धन-बल, जन-बल, मसल पावर, भ्रष्ट संसाधनों के माध्यम से इन उच्च सदनों में पहुँचने लगे जो इनकी गरिमा पर कलंक सिद्ध हुए। हम भूतकाल की नहीं वर्तमान काल की स्थिति पर विचार करें तो 'दैनिक जागरण' (28 अगस्त, 2014) में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार 16वीं लोकसभा के लिए चुने गये कुल सदस्यों में से 185 (34 प्रतिशत) सदस्यों के खिलाफ लंबित आपराधिक मामले है। इनमें से 112 सदस्यों (21 प्रतिशत) के खिलाफ हत्या, हत्या के प्रयास, अपहरण जैसे गंभीर आपराधिक मामले हैं, 17 सदस्यों के खिलाफ हत्या के प्रयास के मामले लंबित हैं, 10 सदस्यों के खिलाफ हत्या के मामले दर्ज हैं। सन् 2009 के चुनाव में ऐसे 158 सदस्य (30 प्रतिशत) चुन कर आये थे जिन्होंने खुद आपराधिक मामलों की घोषणा की थी। जिनमें से 77 सदस्यों 15 प्रतिशत) के खिलाफ गम्भीर आपराधिक मामले दर्ज थे। सन् 2014 लोकसभा चुनाव की दलगत स्थिति का जो विवरण दिया गया है वह इस प्रकार हैं जिनका स्रोत ऐसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स है।

पार्टी	कुल विश्लेषित हलफनामे	आपराधिक मामले	प्रतिशत	गंभीर आपराधिक मामले	प्रतिशत
भाजपा	281	97	35	61	22
कांग्रेस	44	8	18	4	9
अन्नाद्रमुक	37	6	16	3	8
तृणमूल कांग्रेस	34	7	21	4	12
शिवसेना	18	15	83	8	44

केन्द्र में भाजपा-शिवसेना का गठबन्धन है और दोनों ही दलों के आपराधिक सदस्यों की संख्या अन्य दलों की तुलना में सर्वाधिक है। राजग सरकार के 45 में से 12 (27 प्रतिशत) मंत्रियों पर आपराधिक मामले चल रहे हैं। इनमें से 8 (18 प्रतिशत) पर गंभीर आपराधिक मामले चल रहे हैं। मनोज नरूला ने 2004 में सर्वोच्च न्यायालय में जनहित याचिका दायर कर मांग की थी कि कैबिनेट से आपराधिक पृष्ठभूमि वाले मंत्रियों को हटाया जाये जिसे उस समय कोर्ट ने खारिज कर दिया था। उन्होंने इस फैसले के खिलाफ पुनर्विचार याचिका डाली तो मामला 2006 में संविधान पीठ को विचारार्थ भेज दिया गया। अगस्त, 2014 में मुख्य न्यायाधीश आर. एम. लोढा की अध्यक्षता वाली पांच जजों की संविधान पीठ ने इस याचिका पर निर्णय लेते हुए प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्रियों को नसीहत दी है कि वे मंत्रिमण्डल गठन के अपने संवैधानिक अधिकार का सदुपयोग करें और भ्रष्टाचार व कदाचार में आरोपित दागी नेताओं को मंत्रिमण्डल में स्थान न दें। यह नसीहत पांचों जजों की है। सर्वोच्च न्यायालय ने अपने फैसले में निर्देश नहीं, नसीहत दी है अतः सरकारें व राजनीतिक दल इस पर कितने गम्भीर व सक्रिय होंगे, कहना कठिन है। दागी मंत्रियों पर न पहले कभी गाज गिरी है, न अब गिरने वाली है। उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी ने जब मंत्रिमण्डल का गठन, 2012 में किया था तो 26 मंत्रियों (45 प्रतिशत) पर आपराधिक मामले दर्ज थे जिसमें से केवल एक मन्त्री मनोज पारस अब मन्त्रिमण्डल में नहीं हैं। कमोवेश अन्य प्रान्तों में भी यही स्थिति सामने आती है। हरियाणा में एक मंत्री व तीन संसदीय सचिवों के विरुद्ध इनेलो ने सीडी जारी कर सी. एल. यू. (चेंज ऑफ लैण्ड यूज) समेत विभिन्न मामलों में धन मांगने के आरोप लगाये हैं और मामला लोकायुक्त के पास विचाराधीन है। करनाल जिले के पूर्व सरपंच कर्म सिंह के हत्या मामले में तत्कालीन मंत्री ओम प्रकाश जैन और मुख्य संसदीय सचिव जिले राम शर्मा को पद गंवाने पड़े थे। उन पर आरोप है कि परिवहन विभाग में नौकरी दिलाने का झांसा देकर कर्मसिंह से मोटी रकम ली गई थी और जब उसके उम्मीदवारों को नौकरी नहीं मिली और उसने पैसे वापस करने का दबाव बढ़ाया, भण्डाफोड़ करने की चेतावनी दी तो उसकी हत्या करा दी गई। चौधरी भूपेन्द्र सिंह हुड्डा मंत्रिमण्डल के स्वास्थ्य मन्त्री राव नरेन्द्र सिंह, खेल राज्यमंत्री सुखवीर कटारिया पर भी केस चल रहे हैं। उनके मंत्रिमण्डल के पूर्व गृह राज्यमंत्री गोपाल कांडा को एयर होस्टेस गीतिका शर्मा आत्महत्या काण्ड में पद गंवाना पड़ा था। मुख्य संसदीय सचिव जलेव खाँ के पुत्र, मुख्य संसदीय सचिव विनोद भ्याणा, मुख्य संसदीय सचिव रामकिशन फौजी, मुख्य संसदीय सचिव राव दान सिंह के खिलाफ भी विभिन्न आपराधिक मामले लंबित हैं। यह स्थिति तब है जब हुड्डा सरकार देश में अपने को नम्बर वन घोषित करती है। भ्रष्टाचार में वह किस नम्बर पर है इसका जायजा लेने की फुर्सत उसके पास नहीं है। यह सही है कि दोषी सिद्ध न होने तक व्यक्ति निर्दोष माना जाता है, नैसर्गिक न्याय का तकाजा भी यही है लेकिन लोकतन्त्र में लोक भावना का भी महत्त्व होता है जो अपेक्षा रखती है कि दागी व्यक्ति मंत्रिमण्डल में स्थान न पा सकें। ऐसा न होने पर लोकतांत्रिक मूल्यों, मर्यादा व गरिमा को ठेस पहुँचती है। अनचाहे फैसलों के लिए गठबन्धन राजनीति का बहाना भी बनाया जाता है लेकिन जहाँ शुद्ध रूप से पार्टी बहुमत में आती है वहाँ भी दागियों को मन्त्रीमण्डल में स्थान देना आम बात है। वस्तुतः राजनीति भ्रष्ट लोगों के लिए व्यवसाय और अपराधियों के लिए रक्षा कवच बनती जा रही है। राजनीतिक चुनावों की निर्भरता धन, मसल पॉवर, क्षेत्रीयता, जाति, भाषा, सम्प्रदाय आदि पर निरन्तर बढ़ती जा रही है जो इस व्यवस्था को भ्रष्ट बनाने की भूमिका निभा रही है। इससे उच्च सदन भी अपनी सही दशा व दिशा खो बैठेंगे। ऐसा दिखने भी लगा है। सदनों में जो हुड़दंग, आरोप-प्रत्यारोप, गाली-गलौज, हाथापाई, स्पीकर के प्रति अभद्रता, निष्कासन, बहिष्कार व स्थगन की प्रदर्शनी व नौटंकी आये दिन देखने को मिलती है उससे समय और धन की बर्बादी तो होती ही है, अनेक जरूरी बिल भी पास होने से रह जाते हैं और खटास से पूरे सदन की गरिमा नष्ट होती है सो अलग इसमें राष्ट्र विकास के रथ के पहिये जाम होते हैं और भविष्य धुंधला नजर आने लगता है।

जिन सी. बी. आई. जैसी जांच एजेंसियों पर भ्रष्टाचार का भण्डाफोड़ कर भ्रष्टाचारियों को सज़ा दिला कर जेल भेजने का दायित्व है उस सी. बी. आई. के निदेशक रंजीत सिन्हा पर 2जी घोटाले की जांच को पटरी से उतारने के आरोप लगे, अपने सरकारी आवास पर हर हफ्ते हवाला के आरोपों में घिरे मॉस निर्यातक मोइन कुरैशी से 90 बार मिले हों कोयला घोटाले के आरोपी कांग्रेसी सांसद विजय दर्डा के साथ-साथ दूसरे मामलों में फंसे उद्योगपतियों और उनके प्रतिनिधियों जैसे अनिल धीरूभाई अंबानी ग्रुप (ए. डी. ए. जी.) के दो वरिष्ठ अधिकारियों से 15 महीने में 50 से अधिक बार मिले हों तो उनकी कार्यशैली, निष्ठा और ईमानदारी पर कैसे विश्वास किया जा सकता है। सर्वोच्च न्यायालय के वर्तमान न्यायधीश यू. यू. ललित जब 2जी घोटाले के मुख्य लोक अभियोजक थे तब उन्होंने सिन्हा पर अंगुली उठाई थी।

शेष अगले अंक में

thearyasamaj.org

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द महत्त्वपूर्ण निर्णयों के साथ सम्पन्न

हरियाणा में नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या एवं धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान शुरू किया जायेगा

– स्वामी आर्यवेश

- 12 फरवरी, 2015 से 23 फरवरी 2015 तक जनजागरण यात्रा निकाली जायेगी
- 7 मार्च से 15 मार्च तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली में विशाल नशामुक्ति तथा बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन
- अप्रैल में हरिद्वार से भोपाल तक वैदिक विरक्त मण्डल एवं सार्वदेशिक सभा की ओर से वेद प्रचार यात्रा निकाली जायेगी

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 14 दिसम्बर, 2014 को जीन्द में बड़े जोश एवं खरोश के वातावरण में सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी के संयोजन में यह महासम्मेलन मौसम की प्रतिकूलताओं के बावजूद बेहद सफल रहा। हरियाणा के कोने-कोने से हजारों आर्यजन सम्मेलन में पहुँचे। स्त्री और पुरुषों की संख्या लगभग बराबर रही। महासम्मेलन में तीन अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित हुए। प्रातः 10 से 12 बजे तक युवा सम्मेलन 12 से 2बजे तक नशाखोरी तथा कन्या भ्रूण हत्या विरोधी सम्मेलन तथा 2 से 4 बजे तक राष्ट्ररक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया। युवा सम्मेलन की अध्यक्षता श्री वेद प्रकाश वेनीवाल ने की तथा मुख्यअतिथि श्री जयपाल सिंह मलिक पूर्व निदेशक नेहरू युवा केन्द्र और विशिष्ट अतिथि मास्टर महेन्द्र सिंह शौकन्द चेयरमैन विवेकानन्द स्कूल असन्द थे।

इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री जयपाल सिंह मलिक ने व्यवस्था परिवर्तन के लिए युवाओं का आह्वान किया और बलिदान का रास्ता चुनने की प्रेरणा दी। श्री महेन्द्र सिंह शौकन्द ने युवाओं को संस्कारित करने पर बल दिया। उन्होंने संस्कार देने की योजना बनाने का भी सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि देश के युवा ही देश का भविष्य होते हैं अतः उन्हें सही समय पर सही संस्कार देने की आवश्कता है। बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए वर्तमान में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार एवं अपमानजनक घटनाओं के लिए पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता को दोशी बताया उन्होंने कहा कि संस्कार केवल लड़कियों को ही नहीं लड़कों को भी देने चाहिए। आज उलटा हो रहा है लोग लड़कियो पर पावन्दी लगाते हैं और लड़कों को स्वच्छन्द छोड़ देते हैं। आज दोनों ही को चरित्र की शिक्षा देने की जरूरत है। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध युवाओं को आगे आने की प्रेरणा दी। कन्या भ्रूण हत्या को उन्होंने अपराध ही नहीं अपितु पाप बताया। बेटी बचाओ अभियान की संयोजक प्रवेश आर्या ने युवक एवं युवतियों को समाज के नव-निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि बढ़ते हुए धार्मिक अन्धविश्वास को चुनौती देने का काम युवा ही कर सकते हैं। क्योंकि युवा वर्ग तर्क एवं विज्ञान की कसौटी पर परख कर चीजों का आंकलन कर सकता है। उन्होंने युवाओं से संकल्प पत्र भरने की भी अपील की।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने आगामी 31 दिसम्बर तक एक लाख युवाओं से नैतिकता, ईमानदारी, समाजसेवा, देश भक्ति को अपनाने तथा नशा, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज जैसी बुराईयों को छोड़ने का संकल्प लेने तथा संकल्प पत्र भरने की अपील की। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता अभी से इस कार्य में जुट जायें तथा संकल्प पत्र भरवाकर टिटौली भेजें। उन्होंने कहा कि युवा स्वभाव से विद्रोही होते हैं वे समाज की गलत परम्पराओं एवं रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष किया करते हैं अतः वर्तमान में समाज में धर्म के बढ़ते पाखण्ड की बात हो चाहे नशे की बात हो चाहे कन्या भ्रूण हत्या के नाम पर चल रहे अत्याचार की बात हो युवाओं को चाहिए कि इन बुराईयों को मिटाने के लिए वे आगे आयें। उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् प्रदेश में चरित्र एवं देश भक्ति के संस्कार युवाओं को देने का अभियान चला रही है इसमें आप सबका सहयोग अपेक्षित है। श्री देवेन्द्र आर्य ने आर्य समाज के संगठन को गाँव-गाँव तक फैलाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जैसे स्वामी रामदेव जी ने योग के नाम पर सारे देश को जोड़ दिया इसी प्रकार युवाओं को जोड़ना होगा तथा महर्षि दयानन्द के विचारों को जन-जन तक पहुंचाना होगा। नशाखोरी एवं कन्या भ्रूण हत्या सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए प्रखर वक्ता ओजस्वी लेखक श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने रामपाल दास के पाखण्ड का पटाक्षेप होने को आर्य समाज की विजय बताया। उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया में जहाँ-जहाँ भी आतंकवाद है, अत्याचार है, मानवता कराह रही है वहीं धर्म के नाम पर चल रहा पाखण्ड, अन्धविश्वास, कट्टरता, कठमुल्लापन और धर्मान्धता प्रमुख कारण है। श्री सामवेदी जी ने शराब को एक भयंकर समस्या बताते हुए सारे देश में शराब पर प्रतिबन्ध लगाने तथा नशामुक्त भारत बनाने की सरकार से अपील की। उन्होंने कहा कि शराब से मनुष्य का सर्वनाश हो जाता है। शराब पीने वाले व्यक्ति का विवेक समाप्त हो जाता है। उसकी बुद्धि भटक जाती है किन्तु विडम्बना यह है कि भारत में आज शराब की खपत दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है। शराब को न केवल प्राइवेट व्यवसाईयों ने ही आमदनी का जरिया बना रखा है बल्कि सरकारों ने भी इसको मुख्य व्यवसाय बना रखा है। आश्चर्य की बात यह है कि शराब की बोतलों पर शराब निर्माताओं को वैधानिक चेतावनी देते हुए यह लिखना आवश्यक है कि शराब सेहत के लिए घातक है। लेकिन ऐसी घातक चीज को लाइसेन्स देकर बेचने व पीने पिलाने काधन्धा क्यों किया जा रहा है। इन सब चीजों पर विचार करने के बाद एक ही निष्कर्ष निकलता है कि भारत में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति के विरुद्ध सरकारें पाबन्दी लगायें वहीं आर्य समाज और अन्य सामाजिक संस्थाएं युद्ध स्तर पर कार्य करें।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामन्त्री श्री विरजानन्द जी ने युवा वर्ग को राष्ट्र की नींव बताया उन्होंने धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड के अड्डों को बन्द कराने के लिए देशव्यापी आन्दोलन छेड़ने पर बल दिया। श्री बिरजानन्द जी ने युवाओं में नैतिकता ईमानदारी, राष्ट्रभक्ति के संस्कार देने के लिए परिषद् की भावी योजनाओं पर भी प्रकाश डाला। श्री रणधीर सिंह रेढू एडवोकेट ने स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी रामवेश जी के नेतृत्व में नशे के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान प्रारम्भ करने की अपील की। उन्होंने बताया कि यही वह स्थान है जहां 1992 में महान संन्यासी

thearyasamaj.org

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द महत्त्वपूर्ण निर्णयों के साथ सम्पन्न

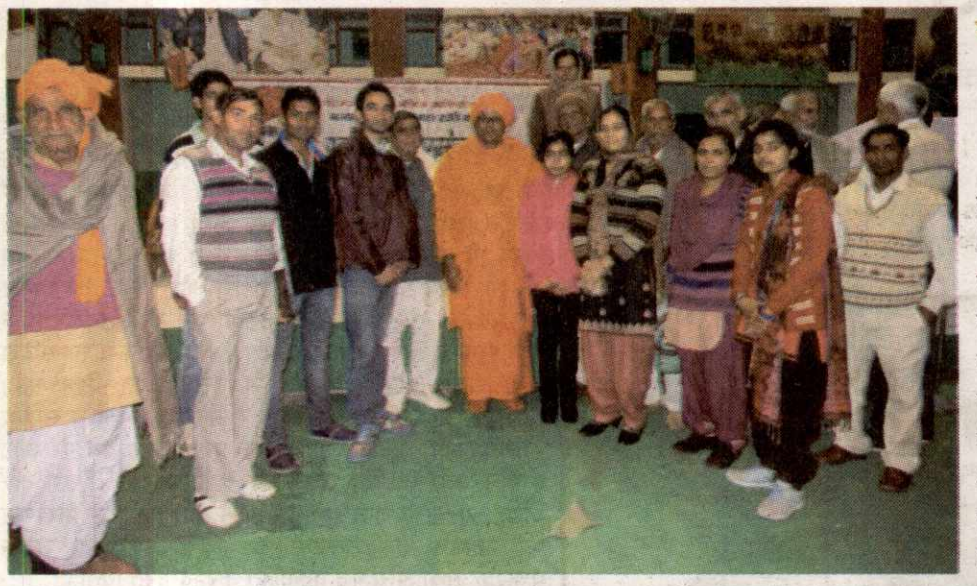

स्वामी इन्द्रवेश जी ने शराब बन्दी आन्दोलन प्रारम्भ किया था तथा हरियाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाने में सफलता पाई थी। उन्होंने कहा कि आर्य समाज को पूरी मजबूती के साथ इस कार्य में जुटना होगा। आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव सिंह बेधड़क ने अपनी ओजस्वी शैली में महर्षि दयानन्द पर गीत सुनाकर सभा में सभी को आनन्दित कर दिया। उन्होंने स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज को बुलन्दियों पर पहुंचाने पर बल दिया।

इस अवसर पर युवा हृदय सम्राट स्वामी आर्यवेश जी ने तीन प्रस्ताव प्रस्तुत कर उन्हें पारित करवाया। स्वामी जी ने आर्य समाज के वर्तमान संगठन में आये हुए बिखराव एवं विघटन को आर्य समाज की त्रासदी बताते हुए कहा कि वह चाहते हैं कि सभी आर्यजन आपस में मतभेद भुलाकर एक मंच पर इकट्ठे हों और नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या तथा धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर जन-जागरण अभियान चलायें। स्वामी जी ने अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द तथा क्रांतिकारी राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह आदि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए आर्यजनों का आह्वान किया कि हमें इन महान बलिदानियों के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। आज हमारे राष्ट्र के ऊपर सांस्कृतिक आक्रमण हो रहा है, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी तथा शोषण की चक्की में पिस रहा भारत देश आर्य समाज से अपेक्षा रखता है कि आर्य समाज संगठित होकर उपरोक्त सभी समस्याओं के समाधान के लिए अपना तेजस्वी रूप प्रस्तुत करे। जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता के जहर से विघटित हो रहा समाज आर्य समाज की तरफ उत्सुकता से देख रहा है। अत: अब आर्य समाज को सक्रिय होना होगा।

महासम्मेलन में पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव संख्या-1

हरियाणा में पूर्ण शराबबन्दी की मांग को लेकर आर्य समाज कृत संकल्प है। यह आर्य महासम्मेलन प्रान्तीय सरकार से मांग करता है कि हरियाणा के माथे से शराब के कलंक को मिटाने के लिए सरकार चरणबद्ध तरीके से कदम उठाये। पहले वर्ष में देहात के दो तिहाई शराब के ठेके बन्द कर दिये जायें। दूसरे वर्ष में देहात के सभी ठेके बन्द कर दिये जायें। तीसरे वर्ष में शहरों के आधे ठेके बन्द कर दिये जायें तथा चौथे वर्ष में पूरे प्रान्त में पूर्ण शराबबन्दी लागू की जाये। हरियाणा सरकार से यह भी मांग की जाती है कि केन्द्र सरकार से सिफारिश करें कि शराब के सम्बन्ध में केन्द्र की ओर से राष्ट्रीय नीति घोषित की जाये। जिन ग्राम पंचायतों के प्रस्ताव शराब का ठेका न खोलने के लिए पारित किये जायें उन गांवों में ठेके न खोले जायें।

प्रस्ताव संख्या-2

कन्या भ्रूण हत्या एक सामाजिक समस्या एवं जघन्य पाप है तथा समस्त नारी जाति का भयंकर अपमान है। लड़कियों की घटती जनसंख्या हम सबके लिए गम्भीर चिन्ता की बात है अत: इस पाप पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए आवश्यक यह है कि केन्द्र सरकार भारतीय दण्ड संहिता के अन्तर्गत धारा-302 में संशोधन करके कन्या के भ्रूण की हत्या को भी कत्ल अथवा हत्या माना जाये। यह प्रावधान किया जाना चाहिए कि जिस परिवार में लड़की पैदा हो उस लड़की के नाम सरकार एक लाख रुपये बैंक में जमा करवाये जिससे माता-पिता को आर्थिक दबाव से मुक्ति मिल सके। जिस परिवार में केवल लड़कियाँ हैं लड़के नहीं हैं उस परिवार को नौकरियों में प्राथमिकता दी जाये और उनका विशेष सम्मान करके विशेष आर्थिक सहयोग दिया जाये या लड़कियो की शिक्षा और विवाह का पूरा खर्च सरकार वहन करे।

प्रस्ताव संख्या-3

हरियाणा में स्थित धर्म के नाम पर चल रहे उन समस्त डेरों व मठों की सघन जाँच कराई जाये जिनके सम्बन्ध में अवैध हथियारों, अनैतिक क्रिया-कलापों अथवा असामाजिक तत्वों के रहने का सन्देह हो साथ ही सरकार ऐसे डेरों व मठों के ऊपर निरन्तर निगरानी की व्यवस्था करे जिससे किसी प्रकार की अवैध असामाजिक गतिविधि

वहां पनप न सके।

स्वामी आर्यवेश जी ने सम्मेलन में उपस्थित विशाल जन समूह से उक्त प्रस्तावों को पास करवाने के पश्चात् भावी कार्यक्रम की घोषणा की। उन्होंने बताया कि - (1) आगामी 31 दिसम्बर तक एक लाख छात्र-छात्राओं के संकल्प पत्र भरवाये जायेंगे।

(2) 12 से 23 फरवरी, 2015 तक हरियाणा में नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध जन-जागरण यात्रा निकाली जायेगी तथा प्रदेश के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री को ज्ञापन दिया जायेगा।

(3) युवाओं के प्रेरणा स्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी के जन्म दिवस के अवसर पर 7 से 15 मार्च, 2015 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक में नशामुक्ति एवं बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का विशाल आयोजन किया जायेगा।

तत्पश्चात् हरियाणा नशाबन्दी परिषद् का नेतृत्व त्यागी तपस्वी संघर्षशील संन्यासी स्वामी रामवेश जी करेंगे तथा उनकी अध्यक्षता में 51 सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। समिति के महामंत्री आचार्य संतराम होंगे।

महासम्मेलन में श्रीमती जगमती मलिक कैथल श्री जनकराज आर्य योगा गोल्ड मैडलिस्ट, श्री महेन्द्र सिंह वैद्य, दया किशन आर्य तथा आचार्य सन्तराम जी का स्मृति चिन्ह तथा शॉल उढ़ाकर स्वागत किया गया। इस स्वागत समारोह की अध्यक्षता श्री वीरेन्द्र लाठर तथा संयोजन मास्टर सत्यवीर आर्य ने किया। उपस्थित जन-समूह ने महासम्मेलन की ओर से की गई ऋषि लंगर की व्यवस्था में सुमधुर भोजन का आनन्द लिया। इस पूरे कार्यक्रम के सूत्रधार एवं संचालक स्वामी रामवेश जी ने सभी आगन्तुक महानुभावों का आभार व्यक्त करते हुए सम्मेलन समापन की घोषणा की।

thearyasamaj.org

साहसिक योद्धा और पुरोधा – स्वामी श्रद्धानन्द

– श्री देवनारायण भारद्वाज

'यथा नाम तथा गुण' सुख व आनन्द की प्रतिमूर्ति परदादा सुखानन्द, निर्भय वीर, ईश्वर भक्त पितामह गुलाबराय और अगाध शिवभक्त पिता नानकचन्द के धर्मनिष्ठ परिवार में, ग्राम तलबन जिला जालन्धर (पंजाब) की पुण्यधरा पर, फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी सं. 1913 वि. के पावन दिवस को जन्में बालक का नाम मुन्शीराम प्रचलित हो गया था। ये अपने चार भाई और दो बहनों में सबसे कनिष्ठ थे। इनके पिता जी अंग्रेजी शासन में एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी थे, जिन्होंने लाहौर, हिसार, मेरठ, बरेली, बदायूँ, काशी, बाँदा, मिर्जापुर, मथुरा, खुर्जा आदि स्थानों में प्रतिष्ठापूर्वक शासन किया। मुंशीराम की बाल्यावस्था एवं किशोर वय अपने पिता के साथ व्यतीत होती रही। इन्होंने बनारस के क्वीन्स कालेज, जयनारायण कालेज और प्रयाग के म्योर कालेज में शिक्षा प्राप्त की थी। वंश परम्परा के अनुसार इनमें धर्म–कर्म एवं भक्ति का विशेष प्रभाव था। विश्वनाथ जी के दर्शन किए बिना ये जलपान तक नहीं करते थे। बांदा में ये नियमित रामचरितमानस का पाठ सुनते थे और प्रत्येक आदित्यवार को एक पैर पर खड़े होकर सौ बार हनुमान चालीसा का पाठ करते थे। एक दिन इनके किशोर हृदय को ऐसी ठेस लगी, कि इनकी समस्त रुढ़िवादी धार्मिक कट्टरता तिरोहित हो गई। हुआ यह कि ये काशी के विश्वनाथ के दर्शनार्थ गए, तो इन्हें बाहर ही रोक दिया गया क्योंकि मन्दिर में रीवां की महारानी दर्शन कर रहीं थीं। इस प्रकार मूर्तिपूजा से इनको विरक्ति हो गई।

ऐसी ही पाखण्डपूर्ण अनेक घटनाओं के कारण मुंशीराम के मन में उथल–पुथल मच गई। पिता का अर्दली जोखू मिसिर रसोई में अपने लिए माँस पकाये तो कोई बात नहीं, किन्तु उसमें से कोई चिलम भरने के लिए आग ले लेता, तो उनका धर्म भ्रष्ट हो जाता। मन्दिर, गुफा, घाट में साधना करने वाले ढोंगी पुजारी साधुओं की वासना की शिकार युवतियों के चीखने पर इनको दौड़कर उन्हें बचाना पड़ा। बनारस में एक वेदपाठी पण्डित के घृणापूर्ण कुत्सित अनाचार को देखकर इन्हें संस्कृतभाषा और उसकी विद्या ही हेय लगने लगी। वे जायें तो जायें कहाँ?मुस्लिममत के दुरित दुराव से ये पूर्व से ही परिचित थे। इन्होंने ईसाई बनने की ठान ली। बपतिस्मा की तिथि तय करने के लिए पादरी के घर गये। उसका पर्दा हटाया तो वहाँ एक पादरी व नन को आपत्तिजनक दशा में देखकर उल्टे पाँव घर लौट आये। अब ये पूर्णरूपेण नास्तिक हो गये। यदाकदा मन्दिर चले जाते थे। मूर्तियों को प्रणाम भी कर लेते थे, किन्तु पण्डे–पुजारियों के आडम्बर–पाखण्ड की आलोचना करने से भी बाज नहीं आते थे। मुंशीराम का मन पढ़ाई में कम प्रगल्भता में अधिक लगता था। अंग्रेजी उपन्यासों का पढ़ना, शतरंज–ताश खेलना, इधर–उधर नाच–गाने–मुजरे में जाना और रईसजादों के साथ भाँति–भाँति के व्यंसनों में फंसे रहना मुंशीराम की नियमित दिनचर्या बन गई थी।

अभी मुंशीराम की शिक्षा पूर्ण भी न होने पाई थी, कि इनका विवाह बारह वर्ष की बालिका शिवदेवी से कर दिया गया। तरुण मुंशी राम ने अंग्रेजी उपन्यासों की नायिकाओं के रूप में जो स्वप्न अपनी अर्द्धांगिनी के सम्बन्ध में संजोये थे, वे सब चकनाचूर हो गये। पर वे इनके जीवन की आधार व रक्षिका अवश्य सिद्ध हुई। दुर्व्यसनग्रस्त मदिरा से अचेत हुए मुंशीराम को देर रात्रि में जब लड़खड़ाते हुए घर पहुँचाया जाता, तब शिवदेवी ही इनको संभालती। इनकी उल्टी आदि के वस्त्र बदलकर गर्म दूध पिलाती और सुला देतीं। जब प्रातःकाल को जगते तो यही उनकी सेवा करती हुई जागती मिलतीं। सं. 1936 वि. में स्वामी दयानन्द का बरेली आगमन हुआ। पिता को तो शान्ति व्यवस्था के नाते स्वामी जी के व्याख्यान सुनने थे। उन्होंने इनके न चाहने पर भी आग्रह पूर्व मुंशीराम को स्वामी जी के सत्संग में सम्मिलित होने की प्रेरणा की। आदित्यमूर्ति दयानन्द के महान् व्यक्तित्व के दर्शन कर, तथा सभा में पादरी स्काट व अन्य यूरोपियनों को बैठा देखकर इनके मन में श्रद्धा का उत्स प्रस्फुटित हो उठा। इन्होंने तीन अवसरों पर स्वामी जी के समक्ष ईश्वर के अस्तित्व पर शंका प्रकट की। उनका उत्तर सुनकर इन्हें मौन रहना पड़ा, पर इन्होंने कह दिया कि "महात्मन्! अपनी तर्क शक्ति के कारण आपने मुझे निरूत्तर तो कर दिया, किन्तु विश्वास नहीं दिलाया कि ईश्वर भी कोई शक्ति होती है।" यह सुनकर स्वामी जी पहले हँसे फिर गम्भीर होकर उन्होंने कहा – "तुमने प्रश्न किये, मैंने उत्तर दिये यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की कि मैं तुम्हारा विश्वास ईश्वर पर करा दूँगा। तुम्हें ईश्वर पर विश्वास तभी होगा, जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे।"

बात आई गई हो गई। बरेली से आकर मुंशीराम जालन्धर में मुख्तार का कार्य करने लगे। अंग्रेजी की चाकरी में इन्हें गुलामी की गन्ध लगती थी। विक्रम सम्वत् 1941 में इन्होंने लाहौर जाकर वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करने का निश्चय किया। विदाई उत्सव मनाते हुए मित्रों के साथ खूब मदिरापान किया। इसी रात्रि एक युवती को अपने मित्र के हाथों से छुड़ाकर उसके पतिव्रत धर्म की रक्षा की। उसी समय बिजली की भांति इनकी आँखों में धर्मबहिन राजरानी, पत्नी शिवदेवी की मूर्ति तथा कोपीनधारी यति दयानन्द की विशाल छवि विभूति रमाये हाथ में मोटा लट्ठ लिए आ खड़ी हुई। ऐसा लगा मानो वे कह रहे हों "क्या अब भी परमेश्वर पर तेरा विश्वास न होगा?" हृदय काँप उठा। उसी समय मदिरा से भरे गिलास और बोतल को दीवार पर पटक कर तोड़ दिया। लाहौर पहुँचने पर इनका सम्पर्क आर्य समाज और सत्यार्थ प्रकाश से हो गया। माँस–मदिरा तथा सभी दुरित दुर्व्यसनों से इन्हें मुक्ति मिल गई। जालन्धर में वकालत करते हुए सामाजिक कार्यों में सक्रिय हो गये। आर्य समाज जालन्धर के प्रधान बना दिये गये और इन्होंने यत्र तत्र भ्रमण कर वेद प्रचार करना आरम्भ कर दिया। आवश्यकतानुसार शास्त्रार्थों के माध्यम से पाखण्डों का खण्डन कर सत्यधर्म दृढ़ किया। उन्होंने 'सद्धर्म प्रचारक' तथा अन्य पत्र प्रकाशित कर वितरित किये।

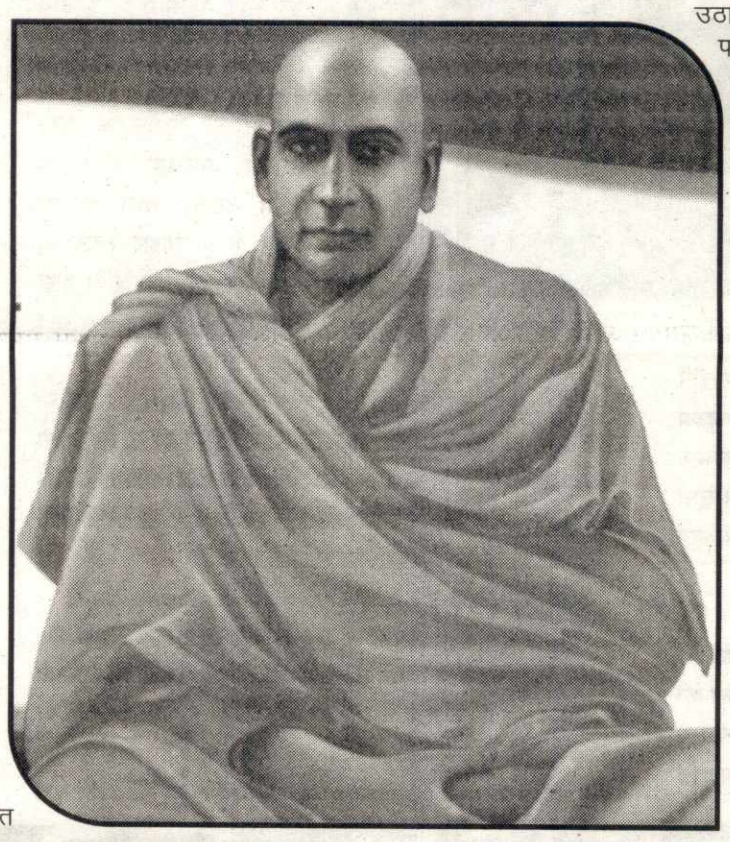

अनेक आर्य समाजों को मिलाकर बनायी गई आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को स्थायित्व प्रदान किया। भरपूर युवावस्था में धर्मपत्नी के आकस्मिक निधन के बाद भी दूसरा विवाह नहीं किया। सर्वप्रथम कन्या पाठशाला जालन्धर में खोली। डी. ए. वी. कॉलेज लाहौर की संचालन व्यवस्था में सहयोगी रहे, किन्तु वहाँ संस्कृत भाषा एवं आर्ष शास्त्रों की उपेक्षा को देखकर सत्यार्थप्रकाश की शिक्षा प्रणाली को मूर्तरूप देने के लिए सन् 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की, जिसके लिए न केवल अपनी कोठी बेच दी, प्रत्युत वांछित धनराशि का संग्रह निश्चित अवधि से पूर्व ही कर लिया और अपने दोनों पुत्रों को भी गुरुकुल में ही रखकर पढ़ाया। दक्षिण अफ्रीका से मोहन दास गांधी भारत आये और गुरुकुल में दर्शनार्थ गए, तो सर्वप्रथम आचार्य मुंशीराम ने ही उनको 'महात्मा' कहकर 'महात्मा गाँधी' विश्व विश्रुत किया। गुरुकुल की 15 वर्ष तक सेवा करके भारत स्वातन्त्र्ययुद्ध में योगदान हेतु दिल्ली आ गये। रौलेट एक्ट के विरूद्ध सत्याग्रह आन्दोलन का नेतृत्व करते समय गोलीबारी करने वाले सैनिकों के सामने अपनी छाती खोलकर हुंकार उठे "मैं खड़ा हूँ गोली मारो" गोरखा सैनिकों की उठी हुई संगीने नीचे झुक गईं। अब तक मुंशीराम महात्मा के सम्बोधन के बाद संन्यासी श्रद्धानन्द बन चुके थे। दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से 30 हजार मुस्लिम भाइयों को सम्बोधित करने के लिए स्वामी जी को बुलाया गया। अकालियों के न्यायपूर्ण आन्दोलन में सहायक बने और जेल यातना सहन की। इन्हें अकालतख्त पर ससम्मान उपेदश देने हेतु आमन्त्रित किया गया।

भारत माता की स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय एकता और वैदिक संस्कृति की समरसता के प्रसारार्थ स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस के आन्दोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया। जलियाँवाला बाग के क्रूरतम हत्याकाण्ड के बाद पंजाब में कांग्रेस महाधिवेशन आयोजित करना भला किसके बूते की बात थी। स्वामी जी ने साहसपूर्वक न केवल स्वागताध्यक्ष के दायित्व को वहन कर इसे सफल बनाया, प्रत्युत प्रथम बार हिन्दी में स्वागत भाषण देकर नया इतिहास रचने का कीर्तिमान् स्थापित कर दिया। भारत भूमि के स्थाई कल्याण के लिए कटिबद्ध स्वामी जी देश में दलित भाईयों की दीनदशा के प्रति चिन्तातुर रहने लगे। उन्होंने इनके उद्धार के लिए प्रस्ताव कांग्रेस अधिवेशनों में रखे। इनकी इस गुहार की अनवरत उपेक्षा हुई, तो उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी और दलितोद्धार सभा के माध्यम से दलितों की कठिनाइयों के निवारण का एक सफल अभियान आरम्भ किया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने न केवल उत्तर भारत में ही, अपितु दक्षिण भारत के आन्ध्र प्रदेश, विजयबाड़ा, मैसूर, चेन्नई और मुम्बई आदि की यात्रायें करके इस दलितोद्धार के अभियान को संचालित किया। स्वामी जी ने अनुभव किया कि देशोद्धार हेतु बृहत् हिन्दू समाज को संगठित किया जाना आवश्यक है। इसीलिए उन्होंने आर्य समाज के साथ–साथ हिन्दू महासभा के माध्यम से हिन्दूधर्म से अन्य मतों में चले गये इच्छुक व्यक्तियों के स्वधर्म में परावर्तन पर बल दिया। उन्हें इसके अनुकूल परिणाम भी मिले। सन् 1924 में शुद्धिसभा के द्वारा तीस हजार नव मुस्लिम मलकाने राजपूतों को गायत्री मन्त्र उच्चारण कराके उनके पुरातन वैदिक धर्म का श्रेयस उन्हें प्रदान किया था।

●

– वरेण्यम् एमाईजी भूखण्ड–45, अवन्तिका कालोनी (ए.डी.ए.), रामघाट मार्ग, अलीगढ़, उ.प्र.

श्रद्धानन्द सदृश बन जाओ

- प्रो. जनमेजय विद्यालंकार, एम. ए. शास्त्री

रोम-रोम में रमा हुआ था, जिनके ओ३म् नाम का राग।
नख से शिख तक पूर्ण हुआ था जिनके मातृभूमि अनुराग।।
अद्वितीय पावन था जिनका भव्य देह महिमा का धाम।
श्रद्धानन्द नाम था उनका उनको सौ-सौ बार प्रणाम।।

●●●●●●

कान धन्य थे जिनने उनका सिंहनाद सुन पाया था।
बड़भागी थे नेत्र जिन्होंने दर्शन लाभ कमाया था।।
अहो धन्य वह मस्तक जिसने उनकी चरणधूलि पाई।
स्मरण शक्ति वह धन्य न जिसने कथा पुरानी बिसराई।।2।।

●●●●●●

एक बार जो उनसे मिल ले धन्य धन्य हो जाता था।
कायरता सब छोड़ उसी क्षण महावीर बन जाता था।।
उनकी दयादृष्टि को पाकर सब निहाल हो जाते थे।
रोते-रोते आते थे हँसते-हँसते जाते थे।।3।।

●●●●●●

उनके बल से सदा सुरक्षित रहता था यह देश महान्।
उनके ही दम से चमका था शिक्षा का प्राचीन विधान।।
अगर कहीं वह जीवित होते कभी न बनता पाकिस्तान।
विश्व शिरोमणि देश हमारा कहलाता इक हिन्दुस्तान।।4।।

●●●●●●

कुछ तो सीखो त्याग तपस्या ऐ कविता पढ़ने वालो।
निर्भयता साहस कुछ सीखो भारत के रहने वालों।।
मुख से नहीं, आचरण से तुम ईश्वर पर विश्वास करो।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

आर्य समाज भरुआ सुमेरपुर हमीरपुर (उ. प्र.) का 38वाँ वार्षिक समारोह सम्पन्न

आर्य समाज भरुआ सुमेरपुर का 38वां वार्षिक समारोह दिनांक 6 से 9 नवम्बर, 2014 तक बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ समारोह में आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान ब्रह्मचारी आचार्य सत्यव्रत जी रोहतक डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री अमेठी, अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य आनन्द पुरुषार्थी होशंगाबाद, पं. नरेशदत्त जी आर्य भजनोपदेशक बिजनौर, पं. नरदेव आर्य भजनोपदेशक भरतपुर (राज.) पं. ओम प्रकाश जी आर्य कानपुर श्री सन्तराम सिंह सेंगर एडवोकेट महोपदेशक कानपुर श्री ब्रह्मनारायण शास्त्री अमौली फतेहपुर स्थानीय विद्वानों में स्वामी रामानन्द जी हमीरपुर, पं. लक्ष्मीशंकर जी हमीपुर आदि रहे। चारों दिन श्रोताओं की अपार भीड़ रही स्थानीय रामलीला मैदान में समारोह का आयोजन किया गया था।

अस्थाई रूप से बनी वैदिक विधि से निर्मित यज्ञशाला की निर्माण कला एवं सजावट देखकर लोग मन्त्रमुग्ध हो रहे थे। प्रथम दिवस यज्ञ आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी ने करवाकर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया तत्पश्चात् ब्लॉक प्रमुख सुमेरपुर श्री जयनारायण यादव जी ने ओ३म् ध्वज रोहण कर मंच का उद्घाटन किया। सभी विद्वानों को जनता ने भरपूर सुना।

प्रात: 8 से 11 बजे तक यज्ञ प्रवचन मध्यान्ह 1 से 5 बजे तक प्रवचन भजनोपदेश तथा रात्रि 7 से 11 बज़े तक प्रवचन भजनोपदेश का कार्यक्रम चलता रहा तीनों समय (जनता) श्रोताओं से यज्ञशाला एवं पांडाल भरा रहता था। अन्तिम दिन आर्य समाज के वयोवृद्ध उपदेशक श्री सन्तराम सिंह सेंगर एडवोकेट कानुपर एवं श्री ओमप्रकाश तिवारी भजनोपदेशक कानपुर का सम्मान किया गया जिसमें माल्यार्पण कर शॉल ओढ़ाकर श्रीफल एवं नगद 1100/- रुपये की धनराशि भेंट की गई तथा मंचस्थ सभी विद्वानों का माल्यार्पण कर शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया।

– रामेश्वर प्रसाद आर्य, मंत्री आर्य समाज,
भरुआ सुमेरपुर (उ. प्र.)

आर्य समाज जवाहर नगर, लुधियाना का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जवाहर नगर, लुधियाना का वार्षिकोत्सव 27 से 30 नवम्बर, 2014 को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पं. बालकृष्ण जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में मंगलयज्ञ किया गया। उत्सव का कार्यक्रम प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि को चला जिसमें यज्ञ के अतिरिक्त पं. उपेन्द्र जी के मनोहर भजन एवं डॉ. देवशर्मा जी वेदालंकार के उत्तम प्रवचन हुए। उत्सव का संदेश देते हुए डॉ. देव शर्मा ने कहा कि यज्ञ हमारी सभी पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं को दूर कर हमारे जीवन में रस व आनन्द भर सकता है। उन्होंने आगे कहा कि हमें वेद की शिक्षाओं को अच्छी प्रकार समझ कर जीवन में उतारना होगा जिससे हमारा कल्याण हो सके। उत्सव की ज्योति को डॉ. विनीता अरोड़ा एवं श्री संजीव सरीन जी ने प्रज्वलित किया तथा ध्वजारोहण श्री डूंगर सिंह जी के द्वारा किया गया। इस उत्सव में आर्य कॉलेज, लुधियाना के पांच छात्रों को बी. ए. फाईनल की परीक्षा में संस्कृत विषय में अपने महाविद्यालय में प्रथम पांच स्थान प्राप्त करने पर श्रीमती सुमित्रा देवी जी बस्सी द्वारा आरक्षित राशि से पारितोषिक एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। लुधियाना जिला की समस्त आर्य समाजों तथा नगर के अन्य प्रतिष्ठित महानुभावों ने इस उत्सव में पधार कर धर्म लाभ उठाया एवं इसकी शोभा को बढ़ाया।

डॉ. विजय सरीन, प्रधान

आर्य समाज के दस नियम ही मानव समाज की उन्नति के सिद्धान्त

– स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती

स्वामी रामवेश जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के निर्देशन में आयोजित प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जीन्द (हरि.) में दिनांक 13 दिसम्बर को रात्रि की वैदिक धर्म प्रचार सभा में प्रवचन देते हुए स्वामी सोम्यानन्द जी ने जोर देकर कहा कि आर्य समाज ही मानव उन्नति का सही मार्ग प्रदर्शित करता है। आर्य समाज के दस नियम किसी व्यक्ति विशेष, समाज विशेष या क्षेत्र विशेष हेतु न होकर सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याणार्थ हैं। इस तथ्य को कोई भी मत या सम्प्रदाय अमान्य करने का सामर्थ नहीं रखता, क्योंकि ये नियम सार्वभौमिक मानव जाति हेतु ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान (वेद) के मंत्रों पर आधारित हैं। इस सन्दर्भ में स्वामी जी ने ऋग्वेद के प्रथम मंत्र :-

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्वजम्।
होतारं रत्न धातमम्॥

की विस्तार से व्याख्या भी की और उपस्थित जन-समूह को आगाह किया कि अन्धविश्वासों के आधार पर प्राप्त बुराईयों को त्यागकर आर्य समाज से जुड़े और इसके कार्यक्रमों में यथा सामर्थ सहयोग प्रदान करें। शांति पाठ के उपरान्त सभा विसर्जित हुई।

दिनांक 14 दिसम्बर को प्रात: कालीन यज्ञोपरान्त प्रवचन करते हुए स्वामी सोम्यानन्द जी ने यजुर्वेद अध्याय 40 के प्रथम मन्त्र -

ईशावास्यमिदं .....

मन्त्र की विस्तार से व्याख्या करते हुए कि सम्पूर्ण सृष्टि में जो कुछ भी जड़ पदार्थ और चेतन प्राणी जगत् है वह सब ईश्वर द्वारा ही रचा गया है और स्वयं उसमें व्यापक होकर उसकी रक्षा और पालन कर रहा है। अत: किसी भी मानव का कुछ भी नहीं है। यह जानकर हमें जीवन में प्राप्त पदार्थों और सुविधाओं को त्याग की भावना से उपभोग करना चाहिए। किसी भी पदार्थ में अपनापन या आसक्ति कष्टदायी ही सिद्ध होती है।

यज्ञमान को आशीष बचन प्रदान करने के उपरान्त यज्ञ सभा सम्पन्न हुई और उपस्थित जन समूह ने यज्ञ प्रसाद ग्रहण किया।

21 कुण्डीय चतुर्वेद शतक महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज मंदिर अन्धेरी (पं.) मुम्बई का 28वां वार्षिकोत्सव समारोह 25 से 28 दिसम्बर, 2014 तक मनाया जायेगा। इस अवसर पर विश्व शांति एवं पर्यावरण की शुद्धि के लिए 21 कुण्डीय चतुर्वेद शतक महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस यज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल एटा के प्रधानाचार्य आचार्य श्री वागीश शर्मा जी होंगे।

आर्ष कन्या गुरुकुल चोटीपुरा उत्तर प्रदेश से गुरुकुल की वेदपाठी छात्राएं पधार रही हैं। मुम्बई जैसे महानगर में वेदपाठ सुनने का अवसर मिलना अति दुर्लभ है। इस महायज्ञ में सम्मिलित होकर वेदपाठ सुनकर पुण्य के भागी बनें। सुप्रसिद्ध सुमधुर गायक श्री प्रभाकर शर्मा के भक्ति संगीत का आनन्द आपको प्राप्त होगा। जो सज्जन इस यज्ञ में यजमान बनना चाहें वे अपने नाम आर्य समाज अंधेरी के कार्यालय में स्वयं पधारकर अथवा फोन नं.:-26393895 पर भी लिखवा सकते हैं। यज्ञ नित्य प्रति प्रात: 7 बजे आरम्भ होगा। यजमान अपना स्थान 6.45 तक अवश्य ग्रहण कर लें।

– हरीश आर्य

आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री चन्द्रभान आर्य का निधन

आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक तथा पूरे हरियाणा में अपने क्रांतिकारी भजनों से धूम मचाने वाले श्री चन्द्रभान आर्य हमारे बीच नहीं रहे। उनका अंतिम संस्कार आज 11 बजे पूर्ण वैदिक रीति से जींद के श्मशान घाट पर किया जायेगा। उनके निधन से आर्यसमाज की असाधारण क्षति हुई है। आपके द्वारा लिखे गये लगभग दस हजार से ज्यादा गीत आर्य समाज को आपकी याद सदैव दिलाते रहेंगे। पूरे आर्य समाज की ओर से आपको विनम्र श्रद्धांजलि पूरे परिवार के प्रति हम सान्त्वना प्रकट करते हैं।

– ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम से सभा कार्यालय "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

thearyasamaj.org

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 26–27 दिसम्बर, 2014
प्रकाशन की तिथि : 25 दिसम्बर, 2014
वैदिक सार्वदेशिक
25 से 31 दिसम्बर, 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

अजेय प्राण

वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवाः अजहुर्ये सखायः।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि।।

—ऋ० ८/६६/७

ऋषिः—तिरश्चीर्धुतानो वा मारुतः।। देवता—इन्द्रः।। छन्दः—विराट्त्रिष्टुप्।।

विनय—हे मेरे आत्मा! तेरे असली साथी तो प्राण ही हैं। जब तक प्राण तेरे साथी नहीं हो जाते तब तक अन्य देवों का साथ बेकार है, प्रत्युत समय पर धोखा देने वाला है। मैं जब उत्तम ग्रन्थ पढ़ता हूँ, सन्तों की वाणी सुनता हूँ, पवित्र उपदेश श्रवण करता हूँ तब मन में बड़े दिव्य, उत्तम विचार उत्पन्न होते हैं; आन्तरिक मनन और भावना से मन की अवस्था ऐसी ऊँची हो जाती है कि हृदय में मानो देवसमाज लग जाता है। मैं अपने को बिल्कुल निर्विकार, निष्काम और पवित्र समझने लगता हूँ, परन्तु पाप–प्रलोभन के आते ही यह सब–का–सब उलट जाता है, वृत्रासुर के सम्मुख आने पर इस सब देव–समाज में भग्गी पड़ जाती है, उसकी फुंकार से सब दिव्य विचार क्षण में उड़ जाते हैं, जरा–सी देर में हृदय में महाबली वृत्रासुर का राज्य जम जाता है। उस समय यह जानता हुआ भी कि मैं बुरा कर रहा हूँ, पाप कर रहा हूँ, पाप की ही ओर खिंचा चला जाता हूँ। मनुष्य इस अवस्था से कैसे पार हो? इसका एक ही उपाय है कि मनुष्य प्राणों की समता प्राप्त करे। प्राणों का सम होना ही प्राणों की (मरुतों की) आत्मा के साथ मैत्री होना है। आत्मा के साथ जुड़ने पर, आत्मा के समीप होने पर प्राण सम और शान्त हो जाते हैं। ये सम हुए प्राण कार्य करने के बड़े, एकल साधन बन जाते हैं। प्राण की सम अवस्था में जो विचार होते हैं, वे स्थिर और दृढ़ होते हैं; इस अवस्था में किये गये संकल्प बड़ा विस्तृत प्रभाव रखते हैं। आत्मशक्ति जब प्राणों को आत्मगृहीत करके उन द्वारा प्रकट होती है तो उसके सामने कोई नहीं ठहर सकता, सब वासनाएँ दब जाती हैं, कोई भी पाप–विचार सिर ऊपर नहीं उठा सकता। बड़े–बड़े प्रलोभन, पाप की बड़ी–बड़ी फौजें आत्मा के एक संकल्प के द्वारा दब जाती हैं, समाप्त हो जाती हैं। आत्माग्नि की एक लपट में भस्म हो जाती है, जब वह आत्म–संकल्प सम हुए, सखा बने हुए प्राणों द्वारा प्रकट होता है और जब आत्माग्नि प्राणमाध्यम द्वारा सहस्त्र–गुणित होकर जल उठती हैं। प्राणों की इस मैत्री को, दोस्ती को पाकर आत्मा क्या नहीं कर सकता? प्राण महाबली है। वह जब तक असम रहता है तब तक उसका बल वृत्रासुर के काम आता है, परन्तु जब वह सम हो जाता है तो वह आत्मा का हो जाता है। आत्मा का सखा प्राण अजेय है।

शब्दार्थ—इन्द्र=हे आत्मन्! **विश्वे देवाः**=सब देव, सब दिव्यभाव **ये सखायः**=जो तेरे साथी बनते हैं **वृत्रस्य श्वसथात्**=पापासुर के सांस से, फुंकार से, बल–प्रदर्शन से **ईषमाणाः**=डरकर भागते हुए **त्वा**=तुझे **अजहुः**=छोड़ देते हैं। हे इन्द्र! **ते सख्यम्**=तेरी मैत्री, तेरा साथ **मरुद्भिः**=प्राणों के साथ **अस्तु**=यदि होता है या हो **अथ**=तो तू **इमाः विश्वाः पृतनाः**=पाप की इस सब बड़ी फौज को **जयासि**=जीत लेता है।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 20 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 25 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।